शुंग वंश

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

परवर्ती मौर्य शासकों के निर्बल पड़ जाने के कारण मगध में प्रशासन तंत्र शिथिल पड़ गया तथा देश के आंतरिक एवं बाहरी क्षेत्र पर खतरा मंडराने लगा| ऐसी परिस्थिति में मौर्य सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या कर शुंग वंश की स्थापना की| पुराणों के अनुसार शुंगो ने 112 वर्षों तक शासन किया और इस वंश में 10 राजा हुए।

शुंग वंश का संस्थापक पुष्यमित्र शुंग था| वह ब्राह्मण पुरोहित था जिसने अशोक द्वारा यज्ञ के रोक लगा दिए जाने के कारण पुरोहित कार्य त्याग कर सैनिक वृत्ति को अपना लिया था| उसने पश्चिमोत्तर से होने वाले यवनों के आक्रमण को रोका| उसने देश में शांति व्यवस्था की स्थापना करके वैदिक धर्म एवं संस्कृति की पुनः स्थापना की| ऐसे में इस काल को वैदिक प्रक्रिया एवं वैदिक धर्म का पुनर्जागरण काल भी कहा जाता है।

पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल की पहली महत्वपूर्ण घटना विदर्भ के साथ युद्ध था। मौर्यों के पतन के बाद विदर्भ में यज्ञ सेन ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया था| उसने यज्ञसेन को पराजित कर अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया| 161 BC में कलिंग नरेश खारवेल ने पुष्यमित्र में को पराजित किया। पुष्यमित्र शुंग के समय में भारत के पश्चिम उत्तर क्षेत्र में हिन्द यूनानियो या यवनों के दो आक्रमण हुए| प्रथम युद्ध का नेतृत्व ड्रेमेट्रियस ने जबकि दूसरे युद्ध का नेतृत्व मिनांडर ने किया| इस बात की पुष्टि गार्गी संहिता से भी होती है।

शुंग वंश का नौवां शासक काशी पुत्र भागभद्र था जो भागवत धर्म का अनुयायी था। इसके शासनकाल में यवन राजा एंटियालकिड्स का राजदूत हेलियोडोरस विदिशा दरबार में आया था| विदिशा में हेलियोडोरस ने वासुदेव के निमित्त प्रथम पत्थर का स्तंभ उत्कीर्ण करा कर अपने को वासुदेव घोषित किया|

शुंगकालीन शासक मौर्य साम्राज्य के द्वारा प्रदत्त भूभाग को बचाए रखने में थोड़े समय के लिए सफल रहे। अयोध्या, विदिशा, स्यालकोट तथा बरार पर इनका आधिपत्य था। पाटलिपुत्र प्रमुख राजधानी बनी रही जबकि द्वितीय राजधानी के रूप में विदिशा का अस्तित्व आया। शुंगकालीन समाज वर्णाश्रम धर्म पर आधारित था| तत्कालीन समय में शूद्रों की स्थिति अच्छी नहीं थी हालाँकि स्त्रियों की स्थिति अच्छी कही जा सकती थी।

कला एवं स्थापत्य की दृष्टि से शुंग काल एक नए युग का प्रतिनिधित्व करता है। पूर्व की काष्ठ वेदिकाओं के स्थान पर भव्य तोरण एवं प्रस्तर वेदिकाओं का निर्माण प्रारंभ किया गया। सौम्यता एवं नैसर्गिकता शुंगकालीन

कला की विशेषता थी। कला एवं स्थापत्य दरबारी कला के रूप में सामान्य जन विषय हो गया| शुंग कला के उत्कृष्ट नमूने भरहुत, बोधगया तथा सांची के स्तूप से मिलते हैं| मूलतः इनका निर्माण तो अशोक के काल में हुआ था लेकिन वेदिका में पत्थरों का प्रयोग इसी काल की देन है|